: .

सं० श्रो०वि•/यमुनानगर/64-87/43654.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० (1) बल्लारपुर इण्डस्ट्रीज लि० (यूनिट श्री गोपाल), यमुनानगर (2) श्री रामनाथ मिश्रा कोन्ट्रेक्टर, विधाधर पेपर हैण्डलिंग कोन्ट्रेक्टर, पेपर मिल, यमुनानगर के श्रमिक श्री धीरेन्ड, पुत्र श्री राम नरैण सिंह मार्फत 126, लैंबर कालोनी, यमुनानगर तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौदोगिक विवाद है;

श्रीर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, श्रब, श्रीद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं 3(44)84—3श्रम, दिनांक 18 श्रप्रैल, 1984, द्वारा उक्त श्रिधिसूचना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्बाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन माम में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री धीरेन्द्र की सेदाओं का समापन वायोचित तथा ठांक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० स्रो० वि०/यमुना/69-87/4366! - लंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० (1) बल्लारपुर इण्डस्ट्रीज लि० (यूनिट श्री गोपाल), यज्ञानगर (1) श्री रामनाथ मिश्रा कोन्ट्रेक्टर, विधाधर पेपर हैण्डलिंग कोन्ट्रेक्टर पेपर मिल, यमुनानगर के श्रमिक श्री सुरेश व्यार, पृष्ट श्री केंग्व मार्फत 126, लेबर कालोनी, यमुनानगर तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित प्रामले के सम्बन्ध में कोई श्रीचोगिक विवाद है:

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विचाद को त्यायिनिर्णय हेतु निदिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, श्रब, श्रोद्यौगिक विवाद श्रांधिन्यम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यशाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं० 3(44)84-3श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984, द्वारा उक्त श्रिधसूचना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिन्शिय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री सुरेश कुमार की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

संद भ्रो विविध्यमुना 68-87/43668 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं । (1) बल्लारपुर इण्डस्ट्रीज लिं। (यूनिट श्री गोपाल), यमुनानगर (2) श्री रामनाथ मिश्रा कन्टेक्टर, विधाधर पेपर हैण्डलिंग कोन्टेक्टर, पेपर मिल यमुनानगर के श्रमिक श्री भारत नाथ मिश्रा पुन्न सनाकता प्रसाद मार्फत 126 लेवर कालोनी यमुनानगर तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामलें में कोई ग्रीशोगिक विवाद है:

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिणय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं:

इसलिये, अब, भौद्योगिक विवाद मधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई मिनतयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रीधसूचना सं० 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 मप्रैल, 1984 द्वारा उपत ग्रीधसूचना की धारा 7 के ग्रीधन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उपत प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—-

क्याश्री भारत नाथ मिश्रा की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० स्रो० वि०/एफ०डी०/97-87/43675.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै० मुख्य प्रशासक, फरीदाबाद मिश्रित प्रशासन फरीदाबाद के श्रमिक श्री राजपाल, पुत्र श्री मदन लाल, गांव बदरोला, तहसील बल्लबगढ़, जिला फरीदाबाद तथा प्रबन्धकों के मध्य इस में इस के बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई झीदोगिक विवाद है;

ृभीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, सब, सौद्योगिक विवाद सिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (म) द्वारा प्रदान की गई किन्तामों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा उन्त प्रधिनियम की घारा 7-क के सधीन गठित भौद्योगिक पिषकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामने जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमकों के बीच या तो विवादप्रस्त मामना/मामने हैं अथवा विवाद से मुसंगत या सम्बन्धित मामना/मामने हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निविष्ट करते हैं:—

क्या श्री राजपाल को सेशाओं का समानन न्यायोजित तथा ठीए है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हिस्सार है ?

तं भो वि । पिष्क बीं । 95-87/43682.— चूंकि हरियाणा के राज्यवाल की राये है कि मैं । मुख्य प्रशासक, करीदाबाद मिश्रित प्रशासन करीदाबाद के श्रमिक श्री नेपाल सिंह, पृत्र श्री जनर सिंह, गांव बहादुरपुर, डा । कुराली, तहसील बल्लबगढ़ जिला फरीदाबाद, तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रीधोणिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद की न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछतीय समझते हैं;

इसलिये, मब, मौद्योगिक विवाद मिधिनियम, 1947 की घारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त अधिनियम की घारा 7-क के अधीन गठित मौद्योगिक मिधकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट मामले जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादमस्त मामला/मामले हैं मथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णेद एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं :—

क्रा श्री नेपाल सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं भो वि /एफ बी । / 99-87 / 43689 - चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै । मुख्य प्रशासक, फरीदाबाद, मिश्रित प्रशासन, फरीदाबाद के श्रमिक श्री कर्ण, मार्फत श्री प्रशोक कुमार शर्मी मकान नं । 538, सैक्टर 16, फरीदाबाद तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामजे के सम्बन्ध में कोई श्रीद्योगिक विवाद है ;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, श्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यवाल इस के द्वारा उक्त श्रिवित्यम की धारा 7-क के अधीन मठित औद्योगिक अधिकरण, हरियाणा, फरीदावाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामजे जो कि उक्त प्रवन्त्रकों तथा श्रीमिकों के बीच या तो विवाद ग्रस्त मामला/मामले हैं, श्रथवा विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री कर्ण की सेवाधों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० मो० वि०/एफ०डी०/99-87/43696.—चूंकि हरियाणा के राज्यकाल की राय है कि मैं० मुख्य प्रणासक, फरीदाबाद मिश्रित प्रणासन फरीदाबाद के श्रोभेक श्री रांभवीर मार्फत श्री ग्राणोक कुमार णर्मा, मकान नं० 538, सैंक्टर 16 फरोरावार क्या कराक्षा के मध्य तनमें इसके वाद निश्चित समने के सम्बन्ध में कोई ग्रोद्गोगिक विवाद है ;

ग्रीर चूंकि हरियामा के राज्यान इस विवाद को त्यार्यनर्गय[े]तु निर्मिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, प्रव, भौद्योगिक विवाद भिवित्यम, 1947, की अप्ता 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रवान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियामा के राज्यवाल इसके द्वारा उक्त अधिनयम की धारा 7-क के प्रधीन गठित

4265

भौद्योगिक प्रधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामला जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादप्रस्तं मामला/मामले हैं, श्रथवा विवाद से मुसंगत प्रथवा सम्बन्धित मामला/मामले है स्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मासं में देने हेंतु निद्दिष्ट करते हैं :—

क्या श्री रामबीर की सेवाग्रों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किम राहत का हकदार है ?

सं भो वि /एफ ब्डी | 105-87 | 43703.— चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राव है कि मैं मुख्य प्रशासक फरीदाबाद मिश्रित प्रशासन फरीदाबाद, के श्रमिक श्री धर्मपाल, मार्फंत श्री बी एम गुप्ता, ई-74 डेबुआ कालीती फरीदाबाद तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बांद लिखित मामले के सम्बन्ध में कीई श्रीक्षीणिक विवाद है :

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायिवर्णय हेतु निर्दिश्ट करना बांछमीय समझते है;

इसिलिए ग्रब, भौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की मई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7-क के प्रधीन गठित भौद्योगिक ग्रिधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामला जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला/मामले हैं भयवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतू निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री धर्मपाल की सेवाओं का समापन श्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राह्तं का हकदार है ?

सं शों वि व /एफ बी व /एफ बी व / 178-87 / 43710 - चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं मुख्य प्रशासक, हरियाणा अरवन डिवेल्पमेन्ट मथाटीं, सैक्टर 16, फरीदाबाद, के श्रीमक श्री जगदीश, पुत श्री राम चन्द, गांव व डी व मछगर तह व स्लवगढ़, जि व फरीदाबाद तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कीई भी चो गिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, भव, भौद्योगिक विवाद मिधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (म) द्वारा प्रदीन की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यवाल इसके द्वारा उक्त मिधिनियम की धारा 7-क के मधीन गठित मौद्यीगिक मिधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, की नीचे विनिर्दिष्ट मामलें जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादमस्त मामला/मामले हैं मधाया विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतुं निर्दिष्ट कर्रते हैं :—

न्या श्री जगदीश की सेवामों का समावन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हरुदार है?

सं भो वि०/एफ़ ब्ही बि मैं अपनि श्रासंक, करीदाबाद मिश्रित प्रशासंक की पाय है कि मैं अपनि प्रशासंक, करीदाबाद मिश्रित प्रशासन करीदाबाद, के भनिक श्री मोर लाल, पुत्र श्री जगन नाथ, मकाग नंव 1-डी/66 एव एन व्याहित ही करीदाबाद, तथा प्रश्नावकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामलें के सम्बन्ध में कोई भीदोनिक विवाद है;

भीर चूंकि हिरियाणा के राज्यपाल इस निवाद को न्यामिनणैय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, मब, भौद्योगिक विवाद भिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (व) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7-क के अधीन गठित आदियोगिक अधिकरण, हरियाणा, करीदावाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामले जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादयस्त मामला/मामले हैं प्रथवा विवाद से मुसंगत या सर्वधित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं:—

्रक्या श्री मोर लाल की सेवाग्रों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस <mark>राइत का</mark> हंकदार है ?